ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अप्रैल-जून २०१९

त्रैमासिक पत्रिका

Scanned by CamScanner

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464 Postal Regd. No/ PMG/KA/NK/BJP/60/2017-19

बाबा ने कहा था

बलि, भेड बकरियों की दी जाती है,
कभी शेरो की नहीं
इसलिए बाबा ने कहा
बेटों, शेर बनो, बकरी नहीं
शेर बनोगे तो, तुमसे डरेगा जमाना
फिर तुम पा सकोगे–सत्ता, सम्मान, समता
जो दीनता से अभी नहीं है पाना ।
बाबा ने कहा था
शेर में कुछ विशेष गुण भी होते हैं दोस्तों !
शेर भूखा मर जाएगा, पर घास नहीं खाएगा ।
शेर दुश्मन पर टूटेगा, जीवन तक जूझेगा,
पीठ न दिखाएगा, सिर न झुकाएगा ।
शेर, भेड–बकरियों की तरह, झुंडों में नहीं चलता,
अरे शेर तो शेर है,वह अकेला ही सवा शेर है
वह अपना रास्ता खुद बनाता है,
फिर आगे कदम बढाता है और दूसरों के लिए
अपनी लीक छोड जाता है ।
जो बलवान है, वह किसी को
'अभय' दान दे सकता है,
जो धनवान है वही किसी को
धन दान ने सकता है
जो निर्बल है,वह दूसरे की क्या रक्षा कर पाएगा ?
जो निर्धन है, भूखा है,
वह दूसरों को क्या खिलाएगा ?
इसलिए, मेरे दोस्तों
बाबा का कहा मानो
भेड–बकरियाँ नही, शेर बनो ।

– सोहनपाल ङ्सुमनाक्षन'

ಅಪ್ಪ ಹೇಳಿದ್ದನು

ಬಲಿ, ಕುರಿ–ಕೋಳಿಗಳಿಗೆ ಕೊಡುವುದುಂಟು
ಹುಲಿಗೆ ಕೊಡುವುದಿಲ್ಲ
ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಅಪ್ಪ ಹೇಳಿದ್ದನು
ಮಗನೆ ಹುಲಿಯಾಗು, ಕುರಿಯಾಗಬೇಡಾ
ಹುಲಿಯಾದರೆ ನಿನಗೆ ಜಗತ್ತೆ ಅಂಜುತ್ತದೆ
ಅದರೊಂದಿಗೆ ದೊರೆಯುವದು ಅಧಿಕಾರ,
ಸನ್ಮಾನ, ಸಮಾನತೆ
ದೀನತೆಯಿಂದ ಇಂದಿನವರೆಗೂ ದೊರೆತಿಲ್ಲ
ಅಪ್ಪ ಹೇಳಿದ್ದನು.
ಹುಲಿಯ ಕೆಲವು ವಿಶೇಷ ಗುಣಗಳಾಗುತ್ತವೆ ಗೆಳೆಯರೆ,
ಹುಲಿ ಹಸಿವಿನಿಂದ ಸಾಯುತ್ತದೆ ಆದರೆ ಹುಲ್ಲು ತಿನ್ನುವುದಿಲ್ಲ
ಹುಲಿ ವೈರಿಗಳ ಆಕ್ರಮಿಸುವುದು, ಜೀವನದ
ಕೊನೆಯವರೆಗೂ ಹೊರಾಡುವುದು
ಬೆನ್ನು ತೋರಿಸುವುದಿಲ್ಲ, ತಲೆ ಬಾಗಿಸುವುದಿಲ್ಲ,
ಹುಲಿ ಕುರಿಗಳಂತೆ, ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ನಡೆಯುವುದಿಲ್ಲ
ಅರೇ ಹುಲಿ ಇದೆ, ಹುಲಿ, ಅದೊಂದು ಸವಾಸೇರ ಇದೆ.
ಅದು ತನ್ನ ದಾರಿಯನ್ನು ಸ್ವತಃ ತಯಾರಿಸುತ್ತದೆ
ಹಾಗೆಯೆ ಮುಂದೆ ನಡೆಯುತ್ತದೆ ಮತ್ತು
ಬೇರೆಯವರಿಗೂ ಸಹ
ತನ್ನ ಗುರ್ತು ಬಿಟ್ಟು ಹೋಗುತ್ತದೆ.
ಯಾರು ಬಲವಾನರಿದ್ದಾರೋ, ಅವರು ಯಾರಿಗೂ
ಅಂಜದೆ ದಾನ ಕೊಡಬಹುದು
ಧನವಿದ್ದರೆ ಆತ ಯಾರಿಗಾದರೂ
ಧನ ದಾನ ಮಾಡಬಹುದು
ಯಾರು ನಿರ್ಬಲರಿದ್ದಾರೊ
ಅವರು ಬೇರೆಯವರ ರಕ್ಷಣೆ ಹೇಗೆ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ?
ಬಡವ, ಹಸಿದವ
ಬೇರೆಯವರಿಗೆ ತಿನಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವೆ?
ಅದಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಗೆಳೆಯರೆ, ಅಪ್ಪ ಹೇಳಿದ್ದು ಕೇಳಿರಿ–
ಕುರಿ–ಕೋಳಿಯಾಗದೆ ಹುಲಿಯಾಗಿ.

– ಸೊಹನಪಾಲ 'ಸುಮನಾಕ್ಷನ'

ISSN 2320-0391

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - 586103 (कर्नाटक)

सौ

ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ,
ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ – ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)

Scanned by CamScanner

श्रध्दांजलि

प्रयोगशील नाटककार गिरीश कार्नाड

• डॉ. एस.टी. मेरवाडे

भारतीय भाषाओं के साहित्य की एक सुदीर्घ परंपरा है । अनेक भाषाओं का अपना अलग साहित्य है । इसी साहित्य सेवा के लिए हर वर्ष किसी न किसी भाषा के साहित्यकार को उनके साहित्यिक योगदान के लिए साहित्य का सर्वोत्कृष्ठ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाता है । आज तक सबसे अधिक ज्ञानपीठ पुरस्कार हिन्दी तथा कन्नड के साहित्यकारों मिला है । ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले कन्नड साहित्यकारों में 1) कुवेंपु 2) द. रा. बेंद्रे, 3) शिवराम कारंत, 4) मास्ती वेंकटेश अय्यंगार, 5) वि. कृ. गोकाक, 6) गिरीश कार्नाड, 7) यू. आर. अनंतमूर्ति उल्लेखनीय है ।

समग्र साहित्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले साहित्यकार गिरीश कार्नाड का जन्म 19 मई, 1937 को महाराष्ट्र के माथेरान नामक गाँव में हुआ । पिता रघुनाथकृष्ण तथा माता कृष्णाबाई । इनके पिता वैद्य थे। गिरीश जी की आरंभिक शिक्षा शिरसी (उत्तर कन्नड जिला) में हुई । कर्नाटक कॉलेज, धारवाड से सन् 1957 में उन्होंने गणित तथा संख्याशास्त्र विषय में बी.ए. किया । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढते समय अंग्रेजी तथा कन्नड साहित्य एवं नाटक परंपरा का इन्सटिट्यूट अध्ययन किया ।

सन् 1984 में पुर्ण के फिल्म में निर्देशक के रूप में कार्य किया, सन् 1986-1988 तक कर्नाटक नाटक अकादमी के अध्यक्ष के रूप में सेवा की । सन् 1987 में शिकागो विश्वविद्यालय में अतिथि प्राध्यापक के रूप में कार्य किया । सन् 1997 में उनके समग्र साहित्य के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया । उन्होंने कई फिल्मों में अभिनय तथा हिन्दी के 'गोधूली' एवं 'उत्सव' फिल्म का निर्देशन किया है।

कार्नाड ने कुल नौं नाटक लिखे हैं - 1. ययाति (1961), 2. तुगलक (1964), 3. हयवदन (1971), 4. अंजुमल्लिगे (1977), 5. हिट्टीन हुंज (1980). 6. नागमंडल (1989), 7. तलेदण्ड (1990), 8. अग्नि मत्तु मळे (1990), 9. टिप्पू सुल्तान कंड कनसु (2000)

कार्नाड के नाटकों की कथावस्तु प्राचीन कन्नड काव्य, लोककथा, पुराण और ऐतिहासिक घटनाओं से प्रेरित है । कथावस्तु कुछ भी हो लेकिन उसमें नये विचार, नये तंत्र के माध्यम से समकालीनता दृष्टिगोचर होती है ।

कार्नाड के सभी नौं नाटक चर्चित, मंचित तथा अनूदित हैं । उनके द्वारा अंग्रेजी में अनूदित 'नागमंडल' नाटक अमरिका की प्रसिद्ध नाटक संस्था ने मंचित किया । उनके अधिकतर नाटक बी. वी. कारंत ने अनुवाद कर मंचन करवाया । कारंत के अनुसार गिरीश के नाटक नये-नये अर्थ प्रकट करते हैं ।

Scanned by CamScanner

ययाति (1961)

यह कार्नाड का पहला नाटक है । यह एक पौराणिक नाटक है । इसकी कथा सामान्यत: सभी लोगों की जान-पहचान की है । महाभारत में आदिपर्व में आनेवाला आख्यान ही इस नाटक की कथावस्तु है । मूलत: ययाति में एक पुरुष तथा दो स्त्रियों की समस्या है । इसके प्रमुख पात्र हैं - ययाति, पुरू तथा चित्रलेखा। पुरू इस नाटक का केंद्रबिंदु है, यही इसकी विशिष्ठता है। चित्रलेखा एक काल्पनिक पात्र है, जो पुरू की पत्नी है। पुरू, ययाति के पहली पत्नी का पुत्र है । शुक्राचार्य के शाप से ययाति को वृध्दत्व आ जाता है तथा ययाति के पुत्र पुरु द्वारा यौवन लेकर कई वर्षो तक इंद्रीय सुख भोगने के बाद पुरू को उसका यौवन लौटाकर वन जाने की घटना ही इस नाटक की मूल कथावस्तु है । प्रत्येक मनुष्य की इच्छाएँ होती हैं और वह अपनी इच्छाएँ किसी न किसी माध्यम से पूर्ण करते रहता है । यही नाटक का मूल प्रतिपाद्य है । देवयानी का अहंकार, शर्मिष्ठा, बिना शरीर के जीव के समान, ययाति की हार तथा पलायन, पुरू की वैवाहिक जीवन के प्रति अनासक्ति आदि के द्वारा मानव की साहसमय जीवन किस तरह दुर्गति की ओर जाता है, इसको स्पष्ट किया गया है । मंचनीय दृष्टि से यह एक सफल नाटक कहा जा सकता है ।

तुगलक (1964)

यह ऐतिहासिक नाटक है । 14 वी शताब्दी का एक शासक तुगलक । मोहम्मद नाटक का नायक है । यह दिल्ली का सुल्तान है । दौलताबाद को राजधानी बनाने का धैर्य, नाटक की कथावस्तु जितनी प्राचीन है उतनी ही उसमें आधुनिकता है । तुगलक ने हिंदू-मुस्लिम के बीच भेद न करने का एक नया इतिहास रचा। इस नाटक में धार्मिक एवं राजनैतिक संवाद है । वेषांतर, मतांतर, राजद्रोह, षडयंत्र, खोटा सिक्का आदियों पर विजय प्राप्त करने वाला मोहम्मद बिन तुगलक अजीज के सामने हार जाता है । अंत में तुगलक द्वारा अजीज को शरण जाना नाटक का दुरंत है ।

हयवदन (1971)

मनुष्य पूर्ण नहीं हैं, पूर्ण बनना उसकी इच्छा, पशुरूपी हयवदन इस अपूर्णता का साक्षी, यही नाटककार गिरीश कार्नाड का मानना है । नाटक के मुख्य पात्र पद्मिनी, देवदत्त तथा कपिल हैं । परंतु हयवदन पात्र नाटककार की अपनी अलग कल्पनाशक्ति की उपज है । इस नाटक का कथानक दो पुरुष एवं एक स्त्री के आसपास बुना गया है । इस नाटक के मूल में लोककला परंपरा, मानव की वैचारिकता तथा जर्मन नाटककार ब्रेक्टन एपीक रंगमंचीय तंत्र प्रमुख है । इस नाटक में संवाद के स्थान पर अंगिक अभिनय को अधिक महत्व दिया गया है । कन्नड नाटक क्षेत्र में यह पहला अनूठा प्रयोग है ।

अंजुमल्लिगे (1977)

नाटक के आरंभ में ऋग्वेद के यम-यमी का पहला श्लोक दिया गया है । वैदिक काल की कहानी में भी बहन - भाई के साथ शारीरिक संबंध रखना चाहती है। भाई उस संबंध को नकारता है । तब उसके बहन की कामेच्छा अधूरी रह जाती है । इसी के इर्द - गिर्द अंजुमल्लिगे नाटक की कथावस्तु बुनी गई है । इस नाटक में अतृप्त मानसिकता के पात्रों का चित्रण है । यामिनी को डेविड के मिलने के बाद भी उसकी समस्या का समाधान नहीं होता । उसे सतीश ही चाहिए । हमारा समाज भाई - बहन के शारीरिक संबंध को स्वीकारता नहीं और वह संबंध ठीक भी नही है, यही नाटक का प्रतिपाद्य है ।

हिट्टीन हुंज (आटे का मुर्गा) (1980)

कन्नड के प्रसिध्द काव्य 'यशोधराचरित' पर आधारित यह नाटक है । प्रस्तुत नायक में भावुत, रानी,

Scanned by CamScanner

राजा तथा राजमाता यही केवल चार पात्र हैं । 'यशोधरा चरित' काव्य जैन धर्म को बिंबित करनेवाली कृति में 320 पद हैं । यशोधर राजा की पत्नी अमृतमति है । रनी अमृतमति ने एकबार अष्टवक्र नामक कुरूप व्यक्ति के संगीत को सुनकर मोहित होती है । रानी और अष्टवक्र के बीच प्रेम हो जाता है । मानव की सहज प्रवृत्तियों को इस नाटक में दर्शाया गया है । प्राचीनता को भी समकालीन दृष्टि से देखना नाटककार गिरीश कार्नाड की विशिष्टता है ।

नागमंडल (1989)

इस नाटक में लेखक ने लोककथा को केंद्र में रखकर स्त्री पुरुष संबंधों को दर्शाने का प्रयोग किया है । रंगभूमि पर सर्वप्रथम इसका मंचन 'संकेत' समूह द्वारा किया गया । 'नागमंडल' नामक कन्नड फिल्म भी बनी, जिसका निर्देशन दिवंगत शंकरनाग ने किया । यह नाटक अमरिका में मंचित हुआ, जिसका निर्देशन जे. गालैंड राइट ने किया । इस नाटक में नागप्पा पात्र द्वारा त्याग प्रेम दोनों को चित्रित किया गया है । इसमे प्रयुक्त लोकभाषा इस नाटक की प्रमुख विशेषता है ।

तलेदण्ड (1990)

'तलेदण्ड' नाटक का अनुवाद स्वयं नाटककार ने अंग्रेजी में किया जिसको पढकर हिन्दी में अनुवाद रामगोपाल बजाज ने किया । नाटक का शीर्षक कन्नड में 'तलेदण्ड' है । जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'शिरच्छेद का दण्ड' या 'सर कलम' परंतु अनुवादक ने लेखक तथा निर्देशक सुझाव एवं सम्मति से 'रक्त कल्याण' शीर्षक को सार्थक समझा । गिरीश कार्नाड का यह दूसरा ऐतिहासिक नाटक है । इसकी कथा बारहवीं शताब्दी के कर्नाटक के महान धर्म एवं समाज सुधारक बसवण्णा (बसवेश्वर) के जीवन पर आधारित है।

अग्नि मत्तु मळे (अग्नि और वर्षा) (1990)

यह नाटक महाभारत के अरण्य पर्वत में लोमश द्वारा युधिष्ठर को युवाक्रित की कथा सुनाये जाने की घटना पर आधारित है । नाटक में नाटकीय रूप में इंद्रविजय की कथा है । साथ निषाद कन्या नित्तल कथा भी जुडी हुई है । प्रस्तुत नाटक की कथा दो-तीन कहानियों से जुडी हुई है । मानवीय संबंधों में बा-बार दिखाई देने वाले हिंसा तथा प्रेम के द्वंद्व ही नाटक का केंद्रबिंदु है । कार्नाडजी के नाटक कालानुसार नये अर्थों को स्पष्ट करते हैं ।

टिप्पू सुल्तान कंड कनसु (टिप्पू के देखे हुए सपने' (2000)

यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है । नाटक का आरंभ एवं अंत मेकैंजी तथा किरमानी के संवादों से होता है । यही इस नाटक की विशेषता है । नाटक में टिप्पू सुल्तान द्वारा देखे गये सपने उसके आंतरिक भावनाओं को स्पष्ट करते हैं । पूरे नाटक में टिप्पू के गुण दिखाई देते है । प्रस्तुत नाटक में टिप्पू का चरित्र आदर्श पात्र के रूप में दिखाई देता है । दूसरी ओर अंग्रेजों के विरुध्द उसका धैर्य और शौर्य सराहनीय है ।

गिरीश कार्नाड के सभी नाटकों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि उनके नाटकों में विशिष्टता, रोमांच, नवीनता का आदर्श रूप दिखाई देता है । नाटककार, अभिनेता, निर्देशक, पटकथाकार, संवादक के रूप में गिरीश कार्नाड कर्नाटक की जनता के लिए गर्व है । ऐसे महान कलाकार का जाना भारतीय कलाक्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति है ।

■■

हिन्दी विभाग, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर मो. 9448185705

ISSN : 2320-0391

Scanned by CamScanner